

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st NOVEMBER 2019



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

धा रुपया

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै

कोशाधिकारि
के. विजयन

वाँगडी
प्रो. जी. मोहन राव
9446369771

न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. वसन्त कुमार

प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

मुखचित्र : सारस्वत असोसियेषन सभाघर, कोच्ची :- हत्रीयि केरळ कोंकणी अकादमीयि एकमेळनु कोंकणी मान्यता दिवसानुबन्ध जाल्नु 20-8-19 क घडेल्ले कार्यक्रमान्तुलि चित्रं। (आभार - एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची)

प्रति - ₹ 10/-
वार्षीक - ₹ 100/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची

SPANDAN
Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 8 | अंक : 11 | 1941 कार्तिक

संपादकीय

कोंकणी यक्षगान

केरळान्तु कथकळि कस्सिकी तस्सीचि कर्नाटकान्तु यक्षगान। पुराणेतिहासांक आधार कोर्नु अस्सिले ह्यें कलारूप फूडेकालाचे जनांक चड आनन्ददायी अस्सिले। मगीरि सिनेमा, टी.वी, सग्ग एंव्वानिक अनि अतँ कम्प्यूटर, इन्टर्नेट, मोबैल सौकर्य सग्ग एंव्वानिक तज्जे प्राधान्य स्वल्प ऊणे जल्या म्होणु संगूयात। जल्यारीयि तन्तु तात्पर्य दर्कोंव्ची अस्सयीचि।

ह्ये यक्षगान संघान्तु अम्चेगेले कलाकारयि मस्त अस्सय। तन्नि उत्सवांकडे, स्वाम्यांगेले चातुर्मासा समयारि सग्ग थंगा वोचून कोंकणी यक्षगान दर्कोंव्चे अत्तयँ चलता अस्स। अट्लान्टा (नोर्त अमेरिका) "कोंकणी सम्मेलन 2016" न्तूयि हज्जो प्रयोगु जल्ला।

ह्ये कोंकणी यक्षगान कलारूपाचे प्रयोग सर्व-साधारण जल्यार चाँग अस्तले। कोंकणी प्रदेशाचे जनानीयि ते बगेक मुक्कारि सोर्नु तंका प्रोत्साहन दींव्का। नवे पिळग्यांकयि हंतु तात्पर्य एम्चे तस्सि कोर्का म्होणु लगेन तं अम्गेलो अभिप्रायु।

कोच्ची, 01-11-2019 — सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

मडगांव :- कोंकणी भाशा मंडळान रवीन्द्र भवनांत दोनि कार्यावळ घडेय्ली। 18.09.19 'पेट्रूल' :- शाळेच्या विद्यार्थ्यां खातीर "शाणी मस्ती - 6" सि.डी.चे प्रकाशन जल्लें। गोंयच्या स्वातंत्र्य सैनिकांचेर आदारिलीं पुस्तकँ, व्यक्ति चित्रणँ, मंगळ, सुविचार, नाटकुलीं पुस्तकँ, तेनालीरामाच्यो काण्यो, ज्योत्स्ना प्रकाशनाचीं 10 अणकारित काणियांची पुस्तकँ इत्यादीचेयि प्रकाशन जल्लें। सि. डी. गितांचेर विद्यार्थियांनि नाच सादर केल्लें। 19, 20 सेप्टं 19 :- तिसरे बाल साहित्य परिशद।

30.09.19, पाय तियात्रिस्त सभाघर, रवीन्द्रभवन, मडगांव (गोंय) :- कोंकणी भाशा मंडळ, गोंय संस्थेन 57 वो वर्धापन दीस मनायलो। 2019 वर्साचे पुरस्कार वितरणयि जल्लें। सेवा-गुरुनाथ केळेकार, कार्यकर्तो-अँथनी वाज, पत्रकारिता-मार्कुस गोन्साल्वीस, शिक्षक - डॉ. भुषण भावे, साहित्य-रुपा कोसंबे (पल्लू-ललित निबंद), राधा भावे (जिवाचो पतंग-ललित निबंद), महेश नायक (ओस्सय कार्नेवाल-नाटक), बाल साहित्य-सुमेधा कामत देसाय (सुमीचें कॉटंग्री), स्तंभलेखन-अभयकुमार वेलींगकार, अणकार-संदेश बांदेकार (अनवाणी) अनि संशोधनात्मक प्रपत्र लेखन जैतिवंत सर्तक-सखाराम शेणवी बोरकार।

29.09.19, विश्वविद्यालय संध्या म्हाविद्यालय मंगळूर :- हंगाचे स्नातकोत्तर कोंकणी विभाग अनि मंगळूर कोंकणी अध्ययन पीठ एकमेळ्नु घडोव्नु हळ्ळेले "साहित्यिक विस्तार कार्यावळ" कार्यक्रमान्तु गोवा विद्यापीठाचे विरमित प्रोफसर (कोंकणी विभाग) प्रियदर्शिनी ताडकोडकार हिगेले "A brief review of Konkani Poetic Literature of Goa" विषयारि भाषण अस्सिले।

कोंकणी कविता * कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर आयोजित प्रतिमास कोंकणी कविसंगमं 30 वें (विकारि-श्रावण) 31.08.19 क अनि 31 वें (विकारि-भाद्रपद) 28.9.19 क सुशीला टी. भट हंगेले घरकडे दवोर्नु जल्लें। * एम.ई.एस. कला वाणिज्य म्हाविद्यालयाचे कोंकणी विभागान म्हाविद्यालयीन विद्यार्थियां खातीर म्हाविद्यालयाचे एम. एस. कामत सभाघरांत कोंकणी कविता सर्त (मत्सर) घडोव्नु हळ्ळें। * 02-10-19, मोलिमा रेसोर्ट, काणकोण, गोंय :- काणकोणाचे लायन्स क्लबान "कोंकणी हास्य कवि सम्मेळन" घडोव्नु हळ्ळें। 17-10-19, फॉमेंतु सभाघर, सरस्वती वाचन मंदिर, पणजि :- कोंकणी लेखक संघान स. विजयाबाय सरमळकार हंगेले उडगासाक कवि संमेलन आयोजित केल्लें।

पंचमी कैळीले कुटुम्ब



- एन. माधव रावु, कोच्ची

गुड्या उंचारि पंचमी कैळीलो
पावसु पळ्यारि पोंवचो घूडु।
तिगेले दोनि पिल्लांकय घेव्नु
रबता ती ते घूडान्तु।।

रत्तीचे चेरडुवांक आहार दित्ता
तिजें पक्कान तंका पंगूर्ता।
जो जो म्होणु निदायता पिल्लांक
पोटोन धोर्नु कैळीयि निदेता।।

सूर्योदयारि उटावनु पंचमि
आहारा खातीरि वत्ता उब्बूनु।
एयले पेयले घरवन्ताचे उष्ट्या
राशीर पळ्ळेले अन्न ती खत्ता।।

पोट भोरनु तीणे अन्न खेल्ले
पिल्लांगुणि चोंचीन्तु धरलें।
आवसूक पोळोव्नु पिल्लांक संन्तोषु जल्लो
किल बिल शब्दान आवसूक स्वागत केल्लें।।

चोंचि विस्कळाव्नु धरली तन्नीं
कैळीन हळ्ळेले अन्न तंचे तोण्णां घल्ले।

पोट भोरचाक भुर्गीं निदेव्नु पळ्ळीं
तंचे ओट्टु कैळीयि निदेव्नु पळ्ळी।।

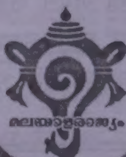
पावसाडीचे एक दिवस
कण्डणा धारेन पोळ्ळो एकु पावसु।
वार्यान घूडु पिस्सूण पोळ्ळो
घूडाचे पोन्दाक पोणु मेल्लीं तीं पिल्लँ।
पिल्लांक चोंव्चाक धवली पंचमि
मिञ्चु लगून ती लसून गेल्ली।।

चौपदी

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची

एय्लेले रीण सोरोंव्चाक
जोडका अम्मि दामु
केल्लेले पाप सोरोंव्चाक
जोडका अम्मि पुण्य।।

"भांगरभूंय" कोंकणी दिनपत्र
वच्चायि ओणलैनः
epaper.thegoan.net


മലയാളരാജ്യം



संत कबीरदास दोहा -



एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"नहाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय।।"

कबीर संगता :- उदकांतु रबुचे मसळेक धुल्यारीयि तझो दुर्गन्ध वचना। तेचि प्रकारि मनांतु अस्सिलो दुर्गन्धु (काम क्रोधादि षडरिपु) न्हल्यारी-पुसल्यारी वचना।

हें तुमका कळता व्हे?

कोंकण्यांगेले आचार-विचार

- सुशीला त्रिविक्रम भट, कोच्ची

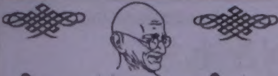
"हथांतु दवरप अनीक जेवण करप"..

ह्याची लेक्कान मुंजीचे व्होरताक 'जेवण' कोरनु वीडो हथांतु दोव्वोर्नु आदरु करप अस्स. हंगा व्होळयांकय लग्नेन्न वीड्यांतु नाणय (दुड्डु) दोव्वोर्नु दींवका म्हुण तां. उपनयनाक जेवण करपाचो प्रथम अधिकारि मवळोचि.

मग्गीर्चे जेवण करप येत्ता सीमन्ताक तां. प्रथमले फन्ता गुरबिणीक कोरचे सीमन्ताक (पुंसवन) बन्धु-बान्धवांनि, इष्ट जनानी सग्ग कोरचे तां. गोडसाणि खाण, कप्पड, चोळी अष्टमंगल्य द्रव्य हें सग्ग मेळ्नु तिका व्होंटी भोरनु वीडो हथांतु दव्वोर्नु कोरची चाली. वीडो मात्र दवरतलींय अस्साय.

कसलेय कारणान सीमन्तान्तु भागु घेंवचाक जावनत्तिल्लीं जन (बयलो) मग्गीरि खंचोय एक शुभदिवसु चोवनु गुरबिणीक जेवण करतलीं. गोडसें खाण, कप्पड-चोळी, अष्टमंगल्य द्रव्य, सुगन्ध पुष्पां हें सग्ग घेव्नु तां जेवण करूक वत्तलीं. फडचाना वीडो-दुड्डु सहित-निर्बन्धु तां. "वीडो हथांतु दवरप" म्हुणूय हक्का म्हणताय. ह्या समयार गुरबिणीक व्होंटि भोरची चालीय अस्सा. जल्यार व्होंटि भरप निर्बन्धु अस्सिल्ली रीति न्हय.

22.09.19 कोच्ची :- "स्वच्छता ही सेवा-2019" कार्यक्रमान्तु टी. डी. हाईस्कूळ एन.सी.सी. (एयरविंग) केडट हन्नि तेग कोंकणी आयुर्वेदिक वैद्य - आपु भट, रंगभट, विनायक पंडित-प्रतिमेकडे शुचीकरण प्रवर्तन केल्लें।



विश्व मानव महात्मजी-37

कृष्ण नारायण नायक, कोच्ची

"विश्वयुद्धा घोर भविष्य"

प्रथम लोक महायुद्ध समाप्त जालें। भारता बायर सर्व भागान देशदेशांकडे हिंसावृत्ति नित्य संभव जत्तचि आयली। युद्धान्तु मण्ड्रल्लें मानवमन एकलगेन मुर्डेलें। देशान्चें खात्तिर चलताले झूझ एकमेका लागि जालें। युद्धा समयारि पुर्पूरो जावनु व्यस्त जत्ताले सैनिकांक, युद्धानन्तर मोहन सुन्दर जीवन लुभावनु प्रतीक्षा भर्लीली। युद्ध जावनु शान्ति पर्तूकयि वाग्धान वार्यान्तु उभलें। साधारण सैनिकालिं गति फूडेचाकयि पास्ट जालि। खंवचाक मेळना, सर्व सामग्रींकयि क्षाम, करूक कांयि काम ना, लोकाक वाट आधार जालि। उद्धाराक सांगीलीं उत्तरं पोक्कोळ म्हुण स्पष्ट जालें। ते सग सर्काराक विरुध घुवले। राय्यांक, भरणाधिपांक तन्नि स्थान भ्रष्ट केल्लें। तांगेले शुष्क विधान काणु विन्दीलें। एकडे जालें म्हणु भित्तरि फप्पेवनु अमन्तकडे तें चंवकीलें। नवी राजनीति संघ रूप घेत्तलिं; पुण ऋणॅ तंन्चे भर्सि आरांभलें। तवळी वगळी स्थिति नीट जाली। अधिकार उप्पून शक्तिवन्त स्थानारूढ जाले। एकाधिपति म्हुण तांका स्थानाविशेषण म्हेळें। क्रूर कठोर रीतीरि तन्नि प्रतियोगीक सुस्तायले। तस्सि ऊन्चारि चळेले दोग जाण तं हिटलर आनि मुस्सोळिनि। जन कोटीले सामान्य जीवन खुणूस जालें। न्याय नीति न्हंय हिंसा अक्रम जाले तांगेले प्रयोगदण्ड। तांगेले नांद आयकील्यारि कडकडेवचें वरि दडियान्तु दवर्ले तन्नि जनपदांक। भीति फाटि घेत्तलें एदें जनपदयि स्वरक्षेक अक्रामक जलें। यूरोपान्तूयि इतर भूखण्डान्तूयि गति हीचि जालि। युद्ध ज्वरां शीर्षस्त जालेले एकाधिपत्यां खाल क्रोण सुरक्षित! सग्ग अरक्षित विडविडेले। तीं जय लक्षण म्हुण अठौन अधिकारोन्मत्त मेधावी एक लगेन कठोर चूषण क्रम आसूत्रण कर्ताचि रावीले। सान दुर्बळ देश सैन्यबलान ताणु कळ्ळे। भरण सुकान हान्चे हात्तान्तु पांवचाकयि थंगा जनालि स्थिति गुलाम्या पस्सि पास्ट जाली।

तेद्दाणा दुस्सरें विश्वयुद्ध प्रारंभु जल्लेंचि। लोकान दिक्किल्यान्तु अनुभसल्यान्तु सर्वोग्र क्रुद्ध आनि नाशकारि युद्ध जालें तें। सर्व मूल्ययिं धार्मिकतायि खाणीं वुडौन मानवत्व पटळी मन्दून उन्मत्ततेन मतिभ्रमान चलास्सिलें मारक घोर युद्ध ! सत्य सत्व विसर्लि। निरपराधीचेंरि कठोरतम, हीन प्रयोग ! विद्वेष विरोधा नग्न ताण्डव भर्लें। ❀

सुभाषित

प्रो. के.एन.आर.भट
कोच्ची

**"लोभात् क्रोधः प्रभवति लोभात् कामः प्रजायते।
लोभान्मोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य कारणम्।।"**

जांवका म्हुणु आग्रहु पंवचे, मेळना जत्तना एकल्याक कोपु एत्ता। अत्याग्रहु कारण, तन्तु लगाव वड्डॅता। भौतिकान्तु लगाव वड्डूनु-वड्डूनु बुद्धि क्षयूयि, तन्निमित्त नाशूयि जत्ता। अत्याग्रहु पाप कर्म करूक कारण जत्ता।

आग्रहु, अत्याग्रहु, दुराग्रहु अस्सि आग्रहाक तीन तराचो जाव्नु वण्टे कॅरयात्। जीवन मुक्कारि वच्चाक जांका जल्लेले विषयान्तु आग्रह करचें स्वाभाविक मात्र; पुण अनियन्त्रित जाव्नु, जांका जल्लेल्यान्तु क्रमातीत लगावु जाव्नु, तें सम्पादन कॅरूक मात्र त्रासु कडचें अत्याग्रहु तँ; मगीरि स्वधर्म, सत्कर्म, दान इत्यादिक करच्यान्तु मानवु चुक्कॅता। जांका जल्लेलेंयि नक्का जल्लेलेंयि, जांका म्हुण आग्रहु पंवचे दुराग्रहु जत्ता। ये विषयान्तु नियन्त्रण रकचें सद्पुरुष लक्षण।

कोंकणी खबरेक चोय्यायि/पळेयात : facebook - कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर

बेट्टीयो

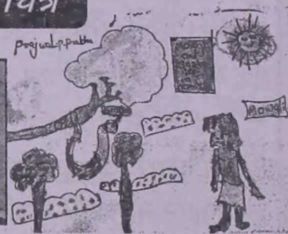
- रघु किच्चेरक्कर, चेर्तला

कोंकण्यांक फूडेचि दुबाजि नक्का - अतॅ कोंकणी शिकोंव्चाक माषु जायि।

On Line शब्दकोश
(कोंकणी-इंग्लीश, इंग्लीश-कोंकणी)
चोय्यायि :-
http://www.konkanivocabulary.in/

चेर्डुवांलि चित्रँ





कु. प्रज्चल प्रभु (7)। कोच्ची एन. प्रदीष प्रभु अनि दिव्या हांगेलो सुपुत्रु।



गोश्रीपुरेशा

- टी. उमेश भट, कोच्ची

गोश्रीपुरेशा कमलाकान्ता
भक्तजन प्रिया हे भगवन्ता।
साधु जन वत्सला श्री वेंकटेशा
करुणामया तूं गोश्रीपुरवासा।।

मनमन्दिरान्तु वासु करी देवा
मनोभिलाष पूर्ण करी देवा।
मनोदुःख दुरित दूर करी देवा
सुखमय जीवन दी तूं देवा।।

मनान्तु जायना दुःखाचें कारण
सम्झूनु घेत्ता सर्वै तुगेलें परीक्षण।
देवा तुजेरि सर्वै करता समर्पण
तूं विना मक्का कोणय ना शरण।।

चित्रशिखण्डी

(महाभारतानुसार)

मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अनि वसिष्ठ - ये सात ऋषि चित्रशिखण्डी नांवांरि जाण जत्तायि।

नमन

- सरस्वती एस.प्रभु, कोच्ची



आवसु नवोच जन्म दित्ता
बापूस पोसून राखता
जीवनांत मनुष्यत्व आमकां
शिक्षकच तं उजवाडताय
सत्य न्यायाचे वटेऩ चलूक
शिक्षक आमकां शिकयताय
जीवित संघर्ष जिखून घेंवचाक
शिक्षक आमकां धीर दित्ताय
ज्ञानाचो उजवाड जळोव्नु
मन प्रकाशमय करताय
विद्या म्होणचे धन दीव्नु
जीवितांत सुख भरताय
शिक्षक देवा पशीय ऊंच म्हुण
संत कबीरय म्हणताय
शिक्षकच तं भक्तांक सर्वांक
देवा लगी पांवयताय
जीवित अर्थवत् कोरूक
शिक्षकांक बहुमान कराय
भक्ति भावान माथें बावगोव्नु
चरणार तांचे नमन कराय।



सूरदास भजन - के. अनन्त भट, कोच्ची

प्रीति कोर्नु कोणाक सुख तें मेळता।
प्रीति पाकुट दीव्या लागी कोर्नु,
आप्याप जीवन्त जळ्ता।।
भँवरु प्रीति ती कोर्नु कमळाक,
सर्वस्व हाथारि सरता।
चितळ प्रीति नादाचेरि कोर्नु,
बाणु सहन तें करता।।
आमी प्रीति केली माधवा लागी,
वत्तना न्हंय तो उलेयता।
सूरदासु प्रभु विना दुःख भारी
दोळ्यानी उदाक होळेयता।।

कोंकणी शब्द अर्थ-अनेकार्थ

- नागेष अण्वेकर, कारवार

नाखा केतलो - बोट्टा, मूगूति
नाख पिरैता
नाखार मूस
नाखार येता
} - राग, कोपु, वर्मिष्ठ, दुष्ठ, कोपिष्ठ, रागिष्ठ

एक प्रयोजनप्रद कोंकणी वेबसैट :
konkaniwordnet.unigoa.ac.in

सोङ्ग्रोळो - पी. एस. प्रदीप, कोट्टयम

सोङ्ग्रोळो वर्णाचो उब्बॅता उंचारि
चन्द मू उब्बूचे शैली ती चोव्चाक
सोणु दित्ता सूत तवतावळ
वार्याची वाट चोवनु खल्लाक।



उब्बो उंचारि हांव केल्लेलो
म्हगेलो सोङ्ग्रो
हांव दिवचे फाटबलान उब्बॅता तो उंचारि,
नांचूनु, कुद्दुनु, चन्दायेन।
सदाकाळ माका नियंत्रण करु
जल्ले म्होणु जावना,
जल्यारि, नियंत्रणारी तज्जी चन्दायि,
उंचाय हाय मू
अशी तं मनीस, नियंत्रण दवॅरि
तुज्जेरि तूंची
ना जाल्यार जत्ता जन्मु,
सूत तुंटलो सोङ्ग्रोसी।

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

"पय्याक धर्ल्यार, खंधारि चडता"

सन्तुश्री

फोवाचो लाडु

बायलाँ खा़तिर (ददल्यांकय) - उषा आर. भट, हैदराबाद

सामग्री

1. तंबडो दाट्‌टु फोवु - 250 ग्रां
2. गोड - 500 ग्रां
3. भूंयमूगु (गुण्टि) - 100 ग्रां
4. खज्जूरु (गुण्टि कळ्ळोलो) - 100 ग्रां.
5. नरलाचि सोयि - 1 वोळ्याचि
6. तूप - 100 ग्रां
7. काजूवीये कुटके - एक मूष्टि
8. सुक्कें द्राक्ष - एक मूष्टि
9. एळाचि पुड्डि - 1 चिपट

भूंयमूगु भज्जूनु, सोल उड्डोव्नु दव्वर्का। फोवु, पोन्द दाट अस्सिल्ले आयदनान्तु घालनु भज्जूनु काणु, निवंर्तरि, भज्जिल्लो भूंयमूगु सहित वन्त्रान्तु (Mixie) घाल्नु, खरखरी पिट्‌टो कोर्नु काडका। खज्जूराचे सान-सान कुटके कोर्का। काजूबीये कुटके, सुक्कें द्राक्ष, खज्राचे कुटके इत्यादि हून तुप्पान्तु घालनु भज्जूनु फोवाचे पिट्यान्तु घाल्का। गोड पांकु कोरनु (चॅड जूनु नक्का) पंकान्तु सोयि घाल्नु मिश्रण कोर्नु रण्नीरि थकूनु खाल कडले उपरान्ते, तन्तु फोवाचो पिट्‌टो, एळाचि पुड्डी तुप्पान्तु भज्जिल्ले काजूवी कुटके, खजरा कुटके, द्राक्ष, भज्जिल्ले उपरान्ते बाकि रवचें तूप, सर्वयि घाल्नु मिश्रण कोरनु, सेम्माळे अर्स्तनाचि उण्डे वन्दूनु काड्का।

29.09.19 बंगळूरु :- यूत ओफ जी.एस.वी. न "मिंगल् काणि" म्हळेले चेर्डुबाळाले कथा कथन कार्यक्रमु घडोव्नु हळ्ळो। विपयु अस्सिलो महाभारत अनि रामायणान्तुल्यो काणियो।

"नोशन प्रस पब्लिशिंग" ह्या प्रकाशन संस्थे वट्‌टेन अनि मुक्कारि कोंकणी भाषेन्तुले पुस्तक छापूचे खातीरीयि सहाय सहकरण मेळतले खंय।

रस्पति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

प्रेमकुमार : डॉक्टर माम, मका कोंबेलो मोट्टो खांव्का म्होणु आसा। बप्पा सांगता केन्नाय वेजिटेरियन जांका म्हुण। इत्ति कोर्का?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, वेजिटेरियन कोंबेलो मोट्टो मात्र काणगेतल्यार पूरो !

* * * *

दाळि रामु : डॉक्टर सायबा, कालि रत्ति साक्षाल वेंकटपति मेज्जे स्वप्नान्तु पावनु, अरे दाळि, तूं पैंसी रुपया रीण काणगेय, डोक्टारा लागी थाकून म्होणु सांगल्या। इत्ति परिहारु मामु ?

डॉक्टरः प्रश्नु ना, मक्काय पळ्ळेले येचि सप्पन! तवळीच केवले सस्सी रुपया नोट काणु कवरान्तु घाल्नु लक्ष्मी देवीले हाथान्तु दवोर्नु दिल्लें। तवळि ते कवर कांय मेळेनांवे तुक्का?



परणी म्हण्णी (गोंय)

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

- नाप व्होड, करणी सान।
- एक सोयरीक करूक
  बारा जोतीं झरोवंक जाय।
- वंयेन पोरसूं खाल्यार
  राखचें कोणें ?
- ताका मिठाक गांठ !
- जीवार आयिल्लें,
  शेंपडेर गेलें।

सूर्यालो सन्देशु



हांव उद्देंवचे सूर्याक चोय्लो अनि निंवगीले - आजि कसलो सन्देश दित्ता तूं मक्का ?

सूर्यु हस्सीलो अनि संगता - हुजवाडु चडु अनि हुनसाणि ऊणे। (चड प्रसन्न अस्सूका। कोपु काडचे ऊणे पूरो म्होणु)

सज्जनांक अलंकारु सद्प्रवृत्ति - वसन्तकुमारी पी. एस., कोच्ची

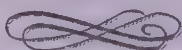
एक गावान्तु एकु रूकु कत्तर्तोलो अस्सिल्लो। एकु दीसु रूकु कत्तरूक तो रन्नान्तु गेल्लो। थंगा तक्का एक वागान धवंडाव्नु घल्लो। तो धावनु एक रुक्कारि चोळ्ळो। अर्धु रूकु चोड्चानीक, रुक्का खन्ध्यारि एकु भल्लु (കരടി/Bear) बेस्सल्या दिकीलो। तो पाप कडकडेव्चांक लगलो। भल्लून संगीले, "तू भीवनक्का, चोणु यो। हांवे तुक्का पीडा दिवन्ना।" तग्गेलीं उत्तरं विश्वासारि काणु तो उंचारि चोणु गेल्लो।

भल्लु बेस्सल्ले खन्ध्यारीचि तोवोयि बेस्सोलो। वागु उंचारीयि चोव्नु बेस्सोलो। ते मनिपाक नीद एत्ता। तें दिक्कूनु भल्लून तक्का धोर्नु तग्गेले व्होण्टीन्तु निद्दाय्लो। वग्गान "ते मनिपाक धिंगूळनु खाल घालि। तक्का खाव्नु हांव वच्चन" म्होणु संगील्याक भल्लून संगीले, "ना ! मेज्जेरि विश्वासु दवर्लेल्याक हांवे वञ्चन कोरन्ना।" एदी घडि वच्चानीक तो मनीषु जग्गो जल्लो। तग्गेले व्होण्टीन्तु भल्लु निद्देलो। वागान भल्लू लग्गि संगील्लिं उत्तरं मनिषा लग्गीयि संगीले। ते वञ्चकान भल्लूक धिंगूळो। रुक्का खन्ध्यारि धोर्नु पळ्ळोलो दिक्कूनु तो खाल पळ्ळोना। वागु संगता, "अरे बुद्धि नत्तिल्या ! तुग्गेलो स्नेहु विस्सोर्नु तुक्का धिंगूळनु घल्लेल्या ते मनिपाक खल्लाक घालि। मिग्गेलि भूक पुणीयि वोच्चो।" तवळि तो भल्लु संगता, "ना, द्रोहु केल्लेल्या लग्गि सरि प्रतिकारु हांवे कोर्ना। सज्जनांक सद्प्रवृत्ति त अलंकारु।" ते आयकूनु ते मनीषान पश्चातापान रोणु भल्लू लग्गि माफि मग्गीलि।



केरळान्तु सिनेमा टी.वी. सीरियल् अनि नाटकांचे क्षेत्रांतु दीव्नु एम्चे जे. सी. फौण्डेपन पुरस्कारान्तुले उत्कृष्ट नाटक पुरस्कारु अंदु (2019) "रावु मम्माले व्होराण" म्हळेले कोंकणी नाटकाक फावो जल्ले।

कर्म कराय



- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

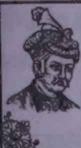
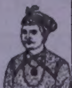
कर्म करी ! फलाचि चिन्ता नक्का म्हुण तां कृष्णान सांगल्यां। जल्यार जन करताय इत्तें ? केवल फलारि दृष्टि दोव्वोंनु मुकार सरताय। ह्योंवय तेंवय जाय। एक मेळ्यार अनियेक जाय। फलाचो मोहु उत्तूलो चॅडता, ते मेळनत्तिल्ले वत्तना जांवची निराशाय तुतलीचि चॅडि जत्ता। तें दिकून तां म्हण्ताय, कोरचे कर्माक प्राधान्य दींवका म्होणु।

आमगेले कर्म अम्मि चांग रीतीन कोरका। तशीचि जीवनान्तु आमका मेळचे दोन्नीय हत्तान स्वीकारूक सिक्कूका। चांग जावो बल्लाव जावो। अनुकूल जावो प्रतिकूल जावो। सग अम्मि जन्म-जन्मान्तर जावनु कोरनु येंवचे कर्माचे फल म्हुण लेक्कूका। मूलधन उत्तूले चड तक्का मेळिच वाडीयि तशीचि चडता। तेंचि वरि चांग कर्म चड करता तशीचि चांग फल मेळता। खंचे कर्मय मन्न दीवनु प्रयत्नान करतेरि निस्सन्देह तजे फल आमचे इच्छानुसार येवनु पांवता। तन्तु संशयु ना। कर्म कराय ! फलाचो विचारु देवारि सोडाय ! तुमका मेळूक अस्सिल्लें कशी घूवनूय तुमचे लगीचि येवनु पांवतलें !

केरळचे बरोवप्याँ लगी

केरळ कोंकणी अकादमी प्रतिवर्ष "पंडरीनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार" दीन्नु एत्तायि। 2019 चे पुरस्काराक लघु गद्य कृती पेटोव्नु दिंव्चाक अपेक्षा करताय।

- केरळचे बरोवप्याँक तँ ये गद्य सर्त।
- काणी, नाटक, प्रबन्ध, यात्रा विवरण - इत्यादि 20 पन्ना पसी (20 Full scap papers) चड जंव्चा नज्ज।
- पन्नाचे एक भागान मात्र बोरोंव्का।
- बरोवप्यालें नाँव, पत्तो आदी वेगळेचि पन्नार बोरोंव्नु कृती लगि दवोर्का।
- कृती मेळका जल्लेली अंतिम तारीक 2019 नवंबर 30.
- कृती देवनागरीन जांव्का बोरोंव्चाक।
- पेटोव्नु दींव्का जल्लोलो पत्तो :- श्री. जी. मोहन रावु, सन्केतं, IX/1110 B, अजन्ता लेन, कोच्ची - 2. Phone : 0484-2229770

अक्बर बिरबल - 1

ए. आर. प्रभु, कोच्ची

एकु दीसु अक्बराले रवळारान्तु, युद्धान्तु मरण पाविले एक योद्धालि आवसु अनि बाय्ल कोर्नु एय्लीं। अवसून संगीले "रय्या! मेगेलो पूतु राज्या बगेक युद्ध कोर्नु मरण पावलो। तगेले खण्डें ह्यें। हज्जान मस्त युद्धान्तु विजयु पावेय्ले अस्स। अतँ अम्गोले जीवन संधारणाक कांयि वाट ना। तुम्गोलि दया जांव्का प्रभो !" अक्बर रायु तें खण्डें काणु घेवनु चोय्लो। ते सगळेचि मत्ति (Rust) येवनु अस्स। रय्यान तंका खण्डे पर्तून दिंव्चाकयि, पांच स्वर्ण नाण्य दिंव्चाकयि कल्पना केल्ली। बिरबलाक तें चाँ ऊणे म्होणु दिस्सलें। तो तें खण्डे काणु घेवनु मस्त घडि अस्सीयि-तस्सीयि घुंव्डाव्नु चोय्ता रब्बीलो। रय्यान निंवगूचानिक बिरबल संगता जल्लो, "राजन ! खण्डे भंगराचे जल्लें वें म्होणु तँ चोय्तालो। लोकंडाक भंगार कोर्चे फत्तरा पसी इतूल की महत्तर तँ एक चक्रवर्तीले करकमल म्होणु तँ संगतायि। जल्यारि तज्जे लक्षण कांयि दिक्कूक जल्लेना मू प्रभो !" रय्याक कायरिं मनां जल्लीं। ते एय्लेले आवसूक अनि बाय्लेक ते खण्ड्याचे जडाणि तितुलेचि भंगार दिंवचाक कल्पन केल्ली। ⁕

साहित्य अकादेमी अनी कोंकणी ⁕ 24-8-19 साहित्य अकादेमी अनी काणकोणचे (गोंय) श्री मल्लिकार्जुन म्हाविद्यालयाचो कोंकणी विभाग एकमेळ्नु "कविसंधि" कार्यावळ घडोव्नु हळ्ळी। कवि अस्सिले प्रसाद लोलयेंकार। ⁕ 27-9-19, साहित्य अकादेमीचे मुम्बै रीजियणल ओफिसान्तु घडेय्लेले "भाषान्तर अनुभव" कार्यक्रमान्तु डॉ. भूषण भावे हत्रि भागु घेत्तलो।

30-9-19 उडुप्पी श्री वेंकटरमण देवस्थानान्तु नवरात्री आघोषाचे रुप्या महोत्सवानुबन्ध (2019) जाव्नु कोच्चीचे प्रिया प्रवीण शेट अनि संगातीन "मोहिनि अवतार" नाटक खेळेय्लें।

05-10-19 मडगांवाचे गोमन्त कला असोसियेशनान गांधी जयंती निमतान अखिल गोंय आंतरशाळा कोंकणी उलोवपाचे सर्त (मत्सर) आयोजित केल्लें।

04.10.19, श्री मल्लिकार्जुन कोळेज, काणकोण (गोंय) :- "आदिवासी संस्कृताय कोंकणी भासः नाद आनी संवाद" ह्या विषयारि एकदिवसीय देशीय सेमिनार जल्ले। संयोजक अस्सिले मंगळूर सर्वकलाशालेचे कोंकणी अध्ययन पीठ; स्नातकोत्तर कोंकणी विभाग; विश्वविद्यालय संध्या म्हाविद्यालय मंगळूर; कोंकणी विभाग, डिपीएम'स श्री मल्लिकार्जुन कोळेज अनि आशावादी प्रकाशन, मुम्बै।

20-10-19 एस.जे.डी. हाळ, अमरावती, कोच्चीः- वैश्य यूत अस्सोसियेषनाचे 51 वें वार्षिक आघोषानुबन्ध जाव्नु इतर मत्सरां भर्सी कोंकणी गान, कोंकणी भाषण मत्सर अस्सिलें।

पुस्तक प्रकाशन ❋ 02-10-19, आर्ट गॅलरी, राजीव गान्धी कलामंदिर, फोंडें, गोंय :- संत अनि कवि समर्थ रामदास स्वामी हांच्या "दासबोध" ग्रंथाच्या कोंकणी भावानुवाद - सुमित्रा विठ्ठळ भावे। ❋ 20-10-19, श्री महालक्ष्मी संस्थान, बांदिवडे (गोंय) :- "रंगतरंग" (निबंध झेलो) - मुकेश थळी। ❋ 19-10-19, कला आनी संस्कृती संचालनालयाचे भोवउद्देशीय सभाघर :- हन्नी, कृष्णदास श्यामा मध्यवर्ती वाचनालय अनि बिम्ब परिवार एकमेळ्नु "हास्य बिम्ब" हो विनोदी साहित्य सुवाळो मनायलो। "नारंगां आनी सुरसुरीं" - कु. म. सुखठणकार "बोरकारी-खंड 3"- दिलीप बोरकार अनि बिम्ब म्हयनाळ्याचो वर्सुको दिवाळी अंक उजवाडायले।

कासरगोड चिन्ना हंगेले 'घर घर कोंकणी' कार्यक्रम :- 11-8-19 क (136) कडुबेट्टु (उडुप्पी) गजेन्द्र शेठ हंगेले घरल्याक, (137) चिट्पाडि (उडुप्पी) मधुकर नायक अनि श्रीकान्त नायक हंगेले घरल्याक, (138) सण्णाकि बेट्टु पारकला (मणिपाल) वेदमूर्ती हरीश भट हंगेले घरल्याक जल्लें। (139) 21-9-19 क बदयेडकाचे बी. गणेश पै हंगेले घरल्याक, (140) 22-9-19 क वोलकाड (उडुप्पी) चे रामकृष्ण शेठ हंगेले फ्लाटांत अनि (141) कल्याणपुर (उडुप्पी) वेंकटरमण देवस्थानालगि काशिनाथ भट हंगेले घरल्याक, (142) 29-9-19 क HAT Hill, मंगळूरु विठ्ठोबा भण्डारकर हंगेले घरल्याक जल्लें।

With Best Compliments from

A WELL WISHER

KOCHI - 2



Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 8 Issue No. 11
Rs. 10/- No of Pages: 20 **SPANDAN**
Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI
Registered KL/EKM/732/2018-20
Licence No. KL/CR/EKM/WPP-22/2018-20
Licensed to Post Without Prepayment
Date of Posting 10. 11. 2019

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph: 2350960 and Published at 8/28, Santheri, 1st Floor, Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682 002. Editor - Suresh A. Shenoi